✿ श्रीगुरु के उद्‌गार :

पूज्य सद्‌गुरुदेवश्री कहानजीस्वामी के पास जब श्री सोगानीजी के आकस्मिक निधन की ख़बर पहुँची, तो उन्होंने वैराग्यपूर्ण सहज भाव से अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा : 'अरे! आत्मार्थी ने मनुष्य जन्म सफल कर लिया है। स्वर्ग में गए हैं और निकट भवि हैं।'

अनेक आत्मार्थियों के जिज्ञासा भरे प्रश्नपत्र भी श्री सोगानीजी के पास आते थे; तादृश सोनगढ़ तथा बम्बई के प्रवास में अनेक मुमुक्षुओं के साथ तत्त्वचर्चा होती थी; उन सब का वे यथोचित समाधान देते। इनमें से विशेष कर सन् १९६२-१९६३ में हुई तत्त्वचर्चा को अनेक मुमुक्षुओं ने लिख लिया था। सद्‌भाग्य से वह (उक्त) सामग्री उन मुमुक्षुओं के पास सुरक्षित थी; जिसे पुस्तकाकाररूप में प्रकाशित करने हेतु पूज्य गुरुदेवश्री की स्वीकृति मिल जाने पर, उस सामग्री को संकलित-सम्पादित

करके 'द्रव्यदृष्टि-प्रकाश' शीर्षक से ग्रंथारूढ़ किया गया। जब इस ग्रंथ की छपाई का कार्य पूरा हो गया, तो उसकी प्रति पूज्य गुरुदेवश्री को देते हुए इस ग्रंथ हेतु आशीर्वादस्वरूप उनके हस्ताक्षरों की टिप्पणी की याचना की, तो उन्होंने ग्रंथ के सतही अवलोकनपर से लिखा कि :

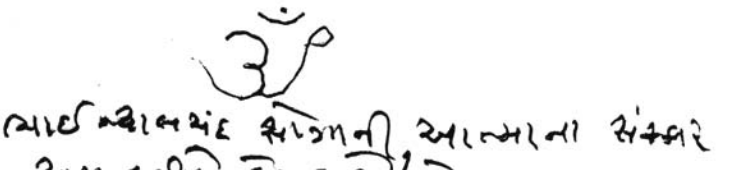

(पूज्य गुरुदेवश्री का आशीर्वाद स्वहस्ताक्षर में)

(हिन्दी भाषांतर : "भाई निहालचंद सोगानी ने आत्मा के अच्छे संस्कार साथ लेकर देह छोडी है।")

परंतु इस ग्रंथ के तलस्पर्शी अध्ययन से श्री सोगानीजी के 'अक्षरदेह' पर से पूज्य गुरुदेवश्री को स्वर्गस्थ आत्मा की यथार्थ, उच्च शुद्ध अंतर्दशा की सुप्रतीति हो गई। और तदुपरांत तो वे अपने प्रवचनों में बारम्बार श्री सोगानीजी की आध्यात्मिक उपलब्धियों, उनके असाधारण पुरुषार्थ व मार्मिक शैली की मुक्तकंठ से सराहना करते रहे। कभी-कभी तो वे भावविभोर होकर यहाँ तक कहते कि :

"श्री सोगानीजी वैमानिक देव में गए हैं, वहाँ से निकलकर मनुष्यभव प्राप्त कर झपट करेंगे; और वे मेरे पहले मुक्ति में जाएँगे। और जब मैं तीर्थंकरभव में (—चौथे भव में) मुनिदीक्षा के समय सर्व सिद्धों को नमस्कार करूँगा तब मेरा नमस्कार उन्हें भी प्राप्त होगा।"